Received: Aug '24
Revised:
Accepted: Sep '24

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

ANALYSIS OF MAHATMA'S GUTSY STARTUP IN THE CONTEXT OF NATIONAL EDUCATION POLICY 2020
महात्मा गाँधी के शैक्षिक चिंतन का राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 के सन्दर्भ में विश्लेषण

Dr. Girdhari Lal Sharma
Assistant Professor, Department of Education,
Jain Vishwa Bharati Sansthan, Deemed University, Ladnun, Rajasthan, India, 341306
E-mail: girdhari1976@gmail.com

ABSTRACT

The National Education Policy 2020 (NEP 2020) is an important milestone in India's educational landscape, which aims to revolutionize the system from primary to higher education. The primary objective of NEP 2020 is to transform India's education system, with an emphasis on a comprehensive framework for elementary to higher education, including vocational studies. Gandhiji gave the name 'Basic Education' to the above-mentioned points of the education policy. Basic education refers to the education that serves as the foundation for the formation of the child's personality. The paper presents an analysis of Gandhiji's educational ideas and the various aspects of 'basic education' given by him in the context of National Education Policy 2020.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसका लक्ष्य प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक प्रणाली में क्रांति लाना है। एनईपी 2020 का प्राथमिक उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है, जिसमें व्यावसायिक अध्ययन सहित प्रारंभिक से उच्च शिक्षा के लिए एक व्यापक ढांचे पर जोर दिया गया है। शिक्षा नीति की उपर्युक्त बातों को गाँधी जी ने 'बुनियादी तालीम' नाम दिया। बुनियादी तालीम से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो बालक के व्यक्तित्व निर्माण की बुनियाद अर्थात् नींव का काम करे। प्रस्तुत शोधपत्र में गांधीजी के शैक्षिक विचारों तथा उनके द्वारा दी गई 'बुनियादी तालीम' के बिभिन्न पहलुओं का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

Keywords: महात्मा गाँधी, शैक्षिक चिंतन, राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020, एनईपी 2020।

मुख्य विषय वस्तु

एनईपी 2020 राष्ट्र की बढ़ती विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आधुनिक परिप्रेक्ष्य की तर्ज पर प्राचीन शिक्षा प्रणाली को फिर से देखने पर केंद्रित है। तदनुसार, यह नीति ऐसे बुद्धिमान मनुष्यों के निर्माण पर जोर देती है जिनके पास विभिन्न विषयों का विविध ज्ञान हो और जिनका समाज के साथ सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक जुड़ाव हो, जिससे व्यक्ति की मुक्ति हो सके। 'पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने, एक समतापूर्ण और निष्पक्ष समाज विकसित करने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा मौलिक है' (एमओएचआरडी, 2020, पृष्ठ 3)। एनईपी 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रबंधन सहित शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार के लिए स्थितियां बनाने का प्रयास करता है। नीति में अपेक्षा की गई है कि 'मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की गहरी भावना, अपने देश के साथ जुड़ाव और बदलती दुनिया में अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक जागरूकता' विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को मौलिक रूप से बदल दिया जाएगा। (एमओएचआरडी, 2020, पृ. 6). दस्तावेज़ में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, पेशेवर और वयस्क और आजीवन शिक्षा शामिल है।

एनईपी 2020 प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानने पर केंद्रित है। इसमें अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के बीच कोई कठोर अंतर नहीं किया गया है तथा प्रत्येक क्षेत्र को समान महत्व दिया जाता है और उच्च शिक्षा में कई 'प्रवेश और निकास विकल्प' प्रदान किये गये है। यह उम्मीद की गई है कि अध्ययन के क्षेत्र में कोई कठोर अलगाव नहीं होने से, शिक्षार्थियों की रचनात्मकता बढ़ेगी, जो बदले में आलोचनात्मक सोच में सहायता करेगी। इसके अलावा, सीखने के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच एक समग्र ज्ञान आधार विकसित करने में सहायता करेगा, जो नैतिक और संवैधानिक मूल्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, एनईपी 2020 मुख्य रूप से एक मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित है जहां शिक्षार्थी पढ़ना और लिखना सीखेगा और एक राष्ट्र को विकसित करने के लिए रचनात्मक और गंभीर रूप से क्षेत्र में सीखने को लागू करने में सक्षम होगा।

शिक्षा का, मानव-सभ्यता के इतिहास के आदिकाल से ही, विकास होता रहा है और इसके मूल्यों में समयानुसार परिवर्तन भी हुआ है। हर देश अपनी समाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए समसामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन व परिवर्धन करता है। परन्तु कोई भी शिक्षा-नीति राष्ट्र के लिए तभी उपयोगी मानी जा सकती है जब वह अपने राष्ट्र की

संस्कृति व भौतिक प्रगति के साथ-साथ सामान्य मानवी के जीवन मूल्यों तथा एकता की भावना को भी सुदृढ़ करे।

शिक्षा नीति की उपर्युक्त बातों को गाँधी जी ने 'बुनियादी तालीम' नाम दिया। बुनियादी तालीम से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो बालक के व्यक्तित्व निर्माण की बुनियाद अर्थात् नींव का काम करे। इसे ही बेसिक एजूकेशन, बेसिक शिक्षा आधारभूत शिक्षा, एवं नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है। गाँधी जी बुनियादी शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय अपेक्षाओं को ठोस रूप देना चाहते थे। इसके माध्यम से लोकतंत्रीय समाज की स्थापना, नागरिकता के गुणों का विकास, आर्थिक और नैतिक विकास आदि की संभावनाएँ देखते हैं।

गाँधी जी की 'बुनियादी शिक्षा, शिक्षा के उन मूल्यों के प्रति सर्वथा सजग, सतर्क और चिन्तित थी। महात्मा गाँधी के शिक्षा -संबंधी सिद्धांतों की पृष्ठभूमि में दो दृष्टियाँ स्पष्ट रूप से सक्रिय प्रतीत होती हैं- "प्रथम- अपने देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को प्रमुखता देना तथा द्वितीय उसे अधिक व्यावहारिक रूप देना। व्यावहारिक अनुभव के आधार पर उन्होंने जिन अमूल्य सूत्रों का निर्माण किया उनकी कभी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ''सिद्धांत के बिना शिक्षा अन्धी होती है और व्यवहार के बिना पंगु।" उन्होंने अपनी शिक्षानीति के सिद्धांतों को व्यावहारिक दृष्टि से भी सर्वग्राह्य बनाने का प्रयास किया। महात्मा गाँधी की भारतीय समाज के लिए इससे बड़ी कोई और देन नहीं हो सकती।

गांधी एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को यदि भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की पीठिका कही जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। महात्मा गांधी ने भी इसे अपने चिंतन और व्यवहार में समावेशित किया था। आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन की संकल्पना गांधी जी की जीवन-दृष्टि का सार तत्त्व है। भारत केन्द्रित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आना आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक सार्थक पहल है। इसमें समग्रता की दृष्टि का परिचय देते हुए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल शिक्षा, हस्तकला, लोक विद्या इत्यादि के पाठ्यक्रम में स्थानीय व्यावसायिक ज्ञान के समावेशन और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर बल देने की बातें कही गई हैं, जो कहीं-न-कहीं आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का ही संकेत है। बेसिक शिक्षा पर वर्धा सम्मेलन 1937 के प्रभाव ने एनईपी 2020 पर काफी प्रभाव डाला है।

गाँधी जी का वह शैक्षिक चिंतन जो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में परिलक्षित होता है , निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता है -

मातृभाषा पर बल

महात्मा गाँधी शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को लेकर अत्यन्त संवेदनशील थे। गाँधी जी का मानना है कि मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बच्चों को शिक्षा देने से उनपर दोहरा बोझ पड़ता है- एक तो विचारगत एवं विषयगत समस्याओं के निदान एवं उच्चार हेतु ज्ञान प्राप्ति के लिए अनावश्यक रूप से समय और श्रम की हानि होती है । इसी तरह, एनईपी 2020 भी शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को शामिल करने से भारतीय संस्कृति और भाषा को बढ़ावा और संरक्षण मिलेगा और छोटे बच्चों को अनावश्यक अवधारणाओं को अधिक तेज़ी से सीखने और समझने में मदद मिलेगी (एमओएचआरडी, 2020)।

व्यावसायिक शिक्षा

महात्मा गाँधी ने बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत श्रम के महत्त्व को स्थान दिया। प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप के बारे में उनका स्पष्ट मत था कि किसी उद्योग या हस्तकला को माध्यम बनाकर ही सारी शिक्षा दी जानी चाहिए। उनका मानना था कि वातावरण के अनुकूल उत्पादक उद्योग को केन्द्र में रखकर बालक को प्रत्येक विषय का ज्ञान कराया जाए। एनईपी 2020 में भी सैद्धातिक शिक्षा के साथ-साथ छात्रें के लिए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट), स्वास्थ्य शिक्षा आदि का समावेश किया गया है। छात्रें का माध्यमिक स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा में एप्रेंटिशिप करने की बात भी जोड़ी गई है। इस नीति में वर्ष 2025 तक 50% छात्र व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकें ऐसा लक्ष्य भी रखा गया है।

शिक्षा में सामुदायिक जुड़ाव

शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी से तात्पर्य संस्थानों और उनके आस-पास के समुदाय के बीच सहयोगात्मक प्रयासों से है। इसमें भागीदारी बनाना, सहयोग को प्रोत्साहित करना और छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने और सामूहिक रूप से शैक्षिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए माता-पिता जैसे विभिन्न हितधारकों को शामिल करना शामिल है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा में स्थानीय समुदाय की भागीदारी होनी चाहिए. एनईपी 2020 में भी स्थानीय समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा दिया गया है

पाठ्यक्रम

एनईपी 2020 ने स्कूली शिक्षा की संरचना में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया है, छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए, नीति ने स्कूली शिक्षा में व्यावसायिक विषयों को भी शामिल किया है। बहुभाषावाद पर भी ध्यान दिया गया है। एनईपी एक ऐसे पाठ्यक्रम पर केंद्रित है जो स्थानीय संदर्भ, शिक्षाशास्त्र और मातृभाषा पर केंद्रित है। परिणामस्वरूप, छात्रों को अध्ययन के लिए लचीलेपन और विषयों की पसंद के साथ सशक्त बनाया गया है। गांधीजी की बुनियादी तालीम की पाठ्यचर्या में भी बिभिन्न विषयों के अध्ययन के साथ ,

बहुभाषावाद एवं स्थानीय उद्योग की शिक्षा को सम्मलित किया गया है जिसका अनुसरण एनईपी 2020 में देखने को मिलता है।

नैतिक एवं चारित्रिक विकास

गांधीजी शिक्षा को एक नैतिक मूल्य प्रणाली मानते थे जो व्यक्ति और समाज के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने चरित्र-निर्माण पर अधिक बल दिया। उनके अनुसार चरित्र विरासत में नहीं मिलता; इसके बजाय, यह सीखा जाता है, जो किसी व्यक्ति की अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करने की क्षमता को संदर्भित करता है। अत: ज्ञान के अंतिम उत्पाद का लक्ष्य नैतिक चरित्र होना चाहिए। केवल अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ही हिंसा और अन्याय से मुक्त सामाजिक व्यवस्था बना सकता है। एनईपी 2020 प्रारंभिक बचपन की शिक्षा से चरित्र निर्माण के महत्व को पहचानती है। इसका मानना है कि शिक्षा का लक्ष्य न केवल संज्ञानात्मक विकास है, बल्कि चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के प्रमुख कौशलों से सुसज्जित समग्र और सर्वांगीण व्यक्तियों का निर्माण करना भी है' (एमओएचआरडी, 2020, पृ 12)।

मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली

गाँधी जी ने सांस्कृतिक मूल्यपरक शिक्षा पर बल देते हुए कहा है- ''मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष की बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्त्व देता हूँ। संस्कृति बालक-बालिकाओं के लिए मुख्य बीज है।" महात्मा गाँधी की मूल्य शिक्षा में सत्य, अहिंसा तथा प्रेम की भावना निहित है। उन्होंने बार-बार दोहराया है कि ''सत्य ही ईश्वर है और उसकी प्राप्ति का मार्ग अहिंसा है। वे मानते हैं कि सत्य की साध्य है और सत्य की प्राप्ति के दो साधन हैं। एनईपी 2020 भी मुख्य रूप से एक मूल्य-आधारित शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित है, जहां शिक्षार्थी पढ़ना और लिखना सीखेगा और एक राष्ट्र को विकसित करने के लिए रचनात्मक और गंभीर रूप से क्षेत्र में सीखने को लागू करने में सक्षम होगा।

आत्म निर्भरता की संकल्पना

देश को आत्मनिर्भर बनाना है तो हमारे छात्रें-युवकों तथा गांवो को आत्मनिर्भर बनाना होगा, जिसका महत्त्वपूर्ण माध्यम शिक्षा ही हो सकती है। हम जिस प्रकार के नागरिक, समाज और राष्ट्र को बनाना चाहते हैं ठीक उसी के अनुरूप ही देश की शिक्षा का स्वरूप भी होना चाहिए। आत्मनिर्भरता का तात्पर्य है स्वयं पर निर्भर होना। आज हम भाषा-भूषा, खानपान, तकनीकी आदि अनेक बातों में अन्यों पर निर्भर हैं या दूसरो का अंधानुकरण कर रहे हैं। स्वयं पर निर्भरता का आधार है स्वदेशी ; महात्मा गांधी ने स्वदेशी के संदर्भ में कहा था ''स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाता है।

इसी प्रकार नई शिक्षा नीति में अनेक स्थान पर स्थानीय भाषा, तकनीक, कौशल, कला एवं कारीगरी आदि को प्राथमिकता देने की बात कही गई हैं। एनईपी 2020 के सही क्रियान्वयन के द्वारा छात्र केवल नौकरी के लिए कतार में नहीं खड़े होगें बल्कि अपने पैरो पर खड़े होने में सक्षम बनेंगे। महात्मा गांधी ने ''हरिजन सेवक (10-11-1946) के अंक में ग्राम स्वराज के संदर्भ में लिखा था- गांवों की पुनर्स्थापना का कार्य कामचलाऊ नहीं बल्कि स्थायी होना चाहिए। उद्योग, हुनर, तदुरूस्ती और शिक्षा इन चारों का सुन्दर समन्वय करना चाहिए और वह नई तालीम में किया गया है।

समावेशन पर बल

गांधी जी का मानना था कि शिक्षा में समावेशन होना चाहिए और कमज़ोर वर्ग के लोगों को भी शिक्षा का लाभ मिलना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** शैक्षिक प्रणाली में एक समावेशी और संरचनात्मक परिवर्तन की कल्पना करती है। यह 'समान और समावेशी शिक्षा' पर केंद्रित है जो इस विचार को प्रतिध्वनित करती है कि किसी भी बच्चे को उनकी पृष्ठभूमि और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के कारण शैक्षिक अवसर के मामले में पीछे नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इस प्रकार एनईपी 2020 में भी समावेशन और समानता को बढ़ावा दिया गया है।

शिक्षार्थी के समग्र विकास पर बल

गांधी जी ने शिक्षा के महत्वपूर्ण तीन आयामों की बात कही थी। हैंड, हैड एंड हार्ट अर्थात बालक हाथ से काम करना सीखें, उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास हो तथा बालक संवेदनशील बने। एनईपी 2020 में बालक के व्यक्तित्व के समग्र विकास की बात को प्राथमिकता दी है और नैतिक मूल्य, संवैधानिक मूल्य आदि के शिक्षा में समावेश करने का प्रावधान किया गया है। एक प्रकार से गांधी जी के तीनों आग्रहों का इस नीति में भली-भांति समावेशन किया गया है।

निष्कर्ष

एनईपी 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका उद्देश्य आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत की परंपरा और मूल्य प्रणाली के आधार पर देश की शिक्षा संरचना के विभिन्न पहलुओं में संशोधन और सुधार का प्रस्ताव देकर भारत की कई बढ़ती विकासात्मक अनिवार्यताओं को संबोधित करना है। शिक्षा के गांधीवादी दृष्टिकोण में निहित, एनईपी 2020 शिक्षार्थियों के बीच समग्र विकास को बढ़ावा देते हुए नैतिक, नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा को आत्मसात करने का प्रयास है।

समग्र विकास के साधन के रूप में शिक्षा पर गांधी का जोर एनईपी 2020 में चरित्र निर्माण, व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामुदायिक जुड़ाव पर केंद्रित है। यह नीति व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति के लिए मानसिक और शारीरिक श्रम के एकीकरण में गांधी के विश्वास को प्रतिध्वनित करते हुए, श्रम

की गरिमा के महत्व को रेखांकित करती है। मातृभाषा, स्थानीय संदर्भ और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के महत्व पर जोर देकर, एनईपी 2020 का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक विविधता और विरासत को संरक्षित करना है, जो गांधीजी का प्रिय सिद्धांत है।

इसके अलावा, एनईपी 2020 में शैक्षणिक संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान करने और बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया जाना, शिक्षार्थियों और शिक्षकों दोनों को सशक्त बनाने के गांधी के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है।

संक्षेप में, एनईपी 2020 राष्ट्रीय विकास के लिए अपने सांस्कृतिक मूल्यों और आकांक्षाओं के अनुरूप अपनी शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने की भारत की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक के रूप में गांधी के शिक्षा दर्शन को अपनाकर, एनईपी 2020 भारत को शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भग्रन्थ

1. जैन, लोकेश ; दीक्षित , महेश नारायण(2021) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं गाँधी दर्शन, नई दिल्ली , डूर्स पुब्लिकेशन
2. बिनीता ; चतुर्वेदी , अरुण कुमार (2020) : गाँधी दर्शन शिक्षा के विविध आयाम , नई दिल्ली , अर्णव एंटर प्राइजेज
3. सिंह , धर्मवीर ; चतुर्वेदी , अरुण कुमार ; चतुर्वेदी , पुनीता (2020) : गाँधी दर्शन एवं शिक्षा , निखिल पुब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीबूटर्स
4. मित्तल ल. (2019) : शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार दिल्ली : पीयरसन
5. भट्टाचार्य सव्यसाचि (2008) : महात्मा और कवि (अनुवाद तालेबर गिरि) नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट
6. पालीवाल आर. के. : गाँधी : जीवन और विचार (ई-बुक mkgandhi.org/ebks/hindi)
7. MoHRD. (2020). National Education Policy, 2020. New Delhi: Ministry of Human Resource Development, GoI.
8. Nishank, R. P. (2020). Multiple points of convergence between Gandhiji's thoughts and NEP. Retrieved 11th October 2020, from The New Indian Express.
9. Pandey, P. (2020). Finding Gandhi In the National Education Policy 2020. Retrieved 11th October 2020, from Outlook.